मध्यप्रदेश में बस्तियों के समीप विडाल प्रजाति

शोभिता मुखर्जी :
प्रमुख वैज्ञानिक,सालिम अली सेन्टर फॉर आर्निथॉलॉजी एण्ड नेचुरल हिस्ट्री

मध्यप्रदेश में बस्तियों के समीप विडाल–प्रजाति

भारत में विडालों की पन्द्रह प्रजातियां पाई जाती है। इतनी अधिक प्रजातियां तो विश्व में और कहीं भी नहीं मिलतीं। इन पन्द्रह में से ग्यारह छोटी तथा मध्यम जो कि देश के अनके प्राकृतावासों में पाई जाती हैं। अनके प्रजातियां तो एक ही क्षेत्र में एक साथ मिलती हैं और अधिकांश प्रजातियां संरक्षित क्षेत्रों के बाहर मिलती हैं। वन विडाल, रस्टी स्पॉटेड विडाल और यहां तक कि केराकल भी खेतों में मिलते हैं तथा वहीं प्रजनन भी करते हैं। वनविडाल और रस्टी स्पॉटेड विडाल असामान्य नहीं हैं। वे, भारत में अनेक स्थानों पर पाये जाते हैं। मगर कबरबिज्जू दुर्लभ है तथा भारत में सीमित क्षेत्रों में ही है।

मानवीय नज़रिये से तो उनका 'अप्राकृतिक' या कृत्रिम भू–स्थलों में आना और वहां प्रजनन करना अज़ीब लगता है परंतु यदि स्वयं विडाल की दृष्टि से देखें तो ये सब एक रहवास ही तो है। उनके लिये तो संरचना महत्वपूर्ण है और इस मायने में खेत घास या झाड़ियों के प्रतिरूप ही तो है। यहां चूहों जैसे अनेक प्राणी होने से उनकी भोजन की ज़रूरतें भी पूरी हो जाती हैं। वास्तव में वन विडाल और रस्टी स्पाटेड विडाल जैसी प्रजातियों के लिये सिंचित कृषि क्षेत्र एक वरदानस्वरूप है। अगर कोई बड़ी समस्या है तो वह फसल–कटाई के समय आती है जो कि बिल्लियों का प्रजनन सीज़न भी है। चूंकि फ़सल कटने से आवरण समाप्त हो जाता है और विडाल–शावक दिखाई देने लगते है। तब या तो वे कुत्तों द्वारा मारे जाते हैं या फिर भूखे मर जाते हैं क्योंकि उनकी माँ भाग चुकी होती है।

चूंकि विडाल–परिवार की पहचान को लेकर बहुत संभ्राति है अतः यह प्रपत्र इसी दिशा में मूल बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है। जब बिल्ली के बच्चे मिलते हैं और उनहें सदाशयी लोग उठा लेते है तो उस समय क्या करना चाहिए उस पर भी चर्चा की गई है। इस विषय को भी लिया गया है कि ऐसी परिस्थिति पैदा न हो कि प्रजनन करने वाली बिल्ली भागने को मजबूर हो जाये और उसे बच्चे छोड़ना पड़े। यह प्रपत्र केवल मध्यप्रदेश में पाई जाने वाली बिल्लियों के ही विषय में है।

****

मध्यप्रदेश में बस्तियों में पाई जाने वाली छोटी बिल्लियों का क्षेत्र

चित्र 1 : वन विलावः सफेद गाल, लंबे कान और पैर, छोटी पूंछ ध्यान से देखें। भारत के यह सामान्य वनविलाव खुले रहवाव पसंद करती है जहां जलस्त्रोत हों। चूहे जैसे कृतंक–प्राणी (रोडेन्ट) इनका भोजन हैं।

चित्र 2 : रस्टी स्पाटेड कैट यह दुनिया की सबसे छोटी बिल्ली है। प्रौढ़ का वज़न 1.2 कि.ग्रा. शरीर पर धब्बे हैं लेकिन पूंछ पर नहीं यह भी चूहे सदृश कृन्तक प्राणी खाती है।

चित्र 3 : केराकलः प्रौढ़ प्राणी का औसत वनज 6 कि.ग्रा. अति दुलर्भ प्राणी। गुच्छेदार लंबे काले कान, बहुत लंबी टांगे, छोटी पूंछ और लालिमा लिये रंग। कृन्तक और पक्षी खाता है।

खेतों में मिले बिल्ली के बच्चों की पहचान

1. क्या आंखें खुल गई हैं और क्या वे स्थायी होकर रेंगने के बजाय चल फिर सकते हैं? यदि इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में है तो बच्चे दस दिन से अधिक के हैं।
जन्मम से दस दिन तक बच्चे आंखे नहीं खोल सकते। यह ध्यान रखें कि कहीं इनके सोने के कारण तो आंखे बंद नहीं है। उन्हें धीमें से ठेले और देखें कि क्या वे आंखें खोल कर चल चलते–फिरते हैं। वे अपने नाखून भी अंदर–बाहर नहीं कर सकते और नाखून दिखाई देते हैं।

चित्र 1. वन विलाव के दस दिन से छोटे बच्चे। इनकी बंद आंखे, खुले नाखून, छोटे कान, गुम्बद जैसा सिर जो आपकी मुट्ठी में आ जाये। इनके सफ़ेद गाल इनकी विशेष पहचान हैं (चित्रः टियासा आध्या)

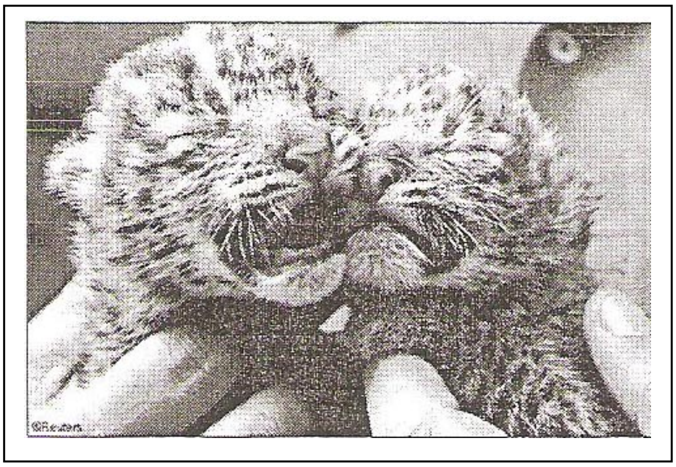

चित्र 2 : तेन्दुये के नवजात बच्चे। चेहरे और सिर पर खूब सारे धब्बे देखें, जिन हाथों में ये बच्चे हैं उनकी तुलना में इनका आकार नोट करें।

2. **बच्चों का आकार :** यदि आंखें बंद है, कान अभी भी छोटे है और बहुत सीधे खड़े नहीं हैं, बच्चे अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते, नाखून खुले हैं और आप की हथेली में आ जाते हैंः एक छोटी बिल्ली–वन विलाव/ रस्टी स्पॉटेड कैट/केराकल/घरेलू बिल्ली।

यदि आंखें बंद हो, कान अभी भी बहुत छोटे हों अगैर सीधे खड़े नहीं हो पाते हों, नाखून खुले हों किन्तु आपकी हथेली से बड़े हों तो फिर व तेन्दुआ/बाघ के शावक होंगे। तेन्दुये के दस दिन से कम के बच्चों का वनज 100–150ग्राम या कुछ कम हो सकता है।

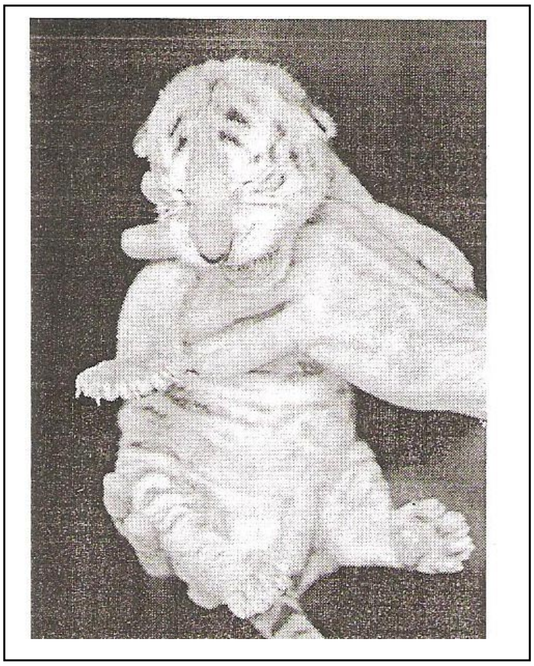

चित्र 3 : नवजात बाघ–शावक। इनका आकार एक प्रौढ़ व्यक्ति की हथेली से बड़ा है, आंखे बंद है, कान झुके हैं और नाखून खुले हैं।

(http://zoologicalwildlifefoundation.com/blog/tag/newborn-cub/,14th January 2013)

3. <u>**शरीर पर प्रतिरूप**</u> **:**

वन विलाव, रस्टी स्पॉटेड कैट, केराकल और तेन्दुये सहित सभी विडाल–शावकों के शरीर पर धब्बे होते हैं। यदि वे बाघ–शासक हैं तो आपकी हथेली से बड़े होने के साथ–साथ उनके शरीर पर धारियां होंगी, आंखे बंद होंगी, कान अभी भी छोटे और सीधे खड़े नहीं होंगे, पैरों पर खेड़ नहीं हो सकते होंगे तथा नाखून भी खुले होंगे।

यदि बच्चे बहुरंगी हैं तब वे घरेलू बिल्ली के होंगे। वे आप की हथेली से छोटे होंगे और उन पर धब्बों के बदले धारियां होंगी।

4. क्या उनके गाल सफेद हैं, कानों के पीछे काले बिन्दु हैं, छोटी पूंछ पर धारियां है?

यदि उत्तर 'हाँ' में है तो यह वन विलाव हैं । वन विलाव के गाल एकदम सफेद होते हैं और इस अल्पायु में संभवतः यहीं उनकी पहचानगत विशेषता है।

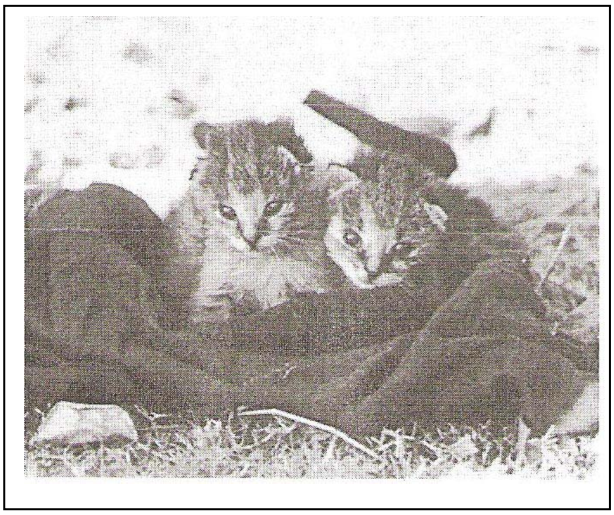

चित्र. 4 पन्द्रह दिन के वन विलाव के बच्चे, आंखे खुली हैं कान अभी भी सीधे नहीं है। सफेद गाल देखें। सिर पर थोड़े–थोड़े चिन्ह (फोटोः उत्तरा मेंदीरत्ता)

5. क्या माथे पर मज़बूत चिन्ह हैं (भूरी और सफेद धारियां) किन्तु पूंछ पर कोई चिन्ह नहीं है।

यदि पूंछ पर चिन्ह नहीं है मगर सिर और चेहरे पर हैं तो वह रस्टी स्पॉटेड कैट है।

चित्र 5 रस्टी स्पॉटेड कैट के बच्चे, दस दिन से ज्यादा के, मस्तक आंखों और चेहरे पर प्रतिरूप, आकार भी देखें, यह दुनिया की सबसे छोटी बिल्ली और प्रौढ़ बिल्ली का वनज 1–2 कि.ग्रा. होता है। अतः बच्चे बहुत छोटे होत हैं।

6. क्या गालोन पर और आंखों के ऊपर काले चिन्ह है? क्या कान पीछे से एकदम कालें है? क्या कान के मूल में से लंबे बाल के गुच्छे निकले है।

यदि उत्तर 'हां' है तो वह केराकल होगा।

कान के गुच्छे बहुत लंबे होंगे और कानों पर लटकेंगे मगर जब बच्चे काफी बड़े हो जायेंगे तो ये भी बढ़ेगे। पूंछ छोटी होगी और उस पर कोई प्रतिरूप नहीं होगा तथा शरीर का रंग लालिया लिये भूरा होगा जो कि मुरम की भांति होगा। नाक संभवतः काली होगी।

चित्र 6. केराकल के नवजात शावक। काले कान, गालों और आंखों पर काले चिन्ह तथा शरीर का रंग देखें।

(http://www.oregonzoo.org/gallery/tags/caracal, 14 April2013)

खेत में पाये गये बिल्ली के बच्चों का क्या करें?

1. उस स्थान से भीड़ और कुत्तो को हटा दें और जब तक माँ वापस नहीं आ जाती इन बच्चों को दूर से देखते रहें। चूंकि मां तभी लौटगी जब वह सुरक्षा के प्रति पूर्णतः आश्वस्त हो जायेगी। अतः इस काम में भी काफी विलम्ब हो सकता है। वह बिल्ली तो अंधेरा होने पर ही लौटेगी। तब तक किसी को वहीं रहकर देखना होगा कि बच्चों को कोई हानि न पहुंचे।
2. बच्चों को खुला न छोड़े और अकेला भी न छोड़े क्योंकि उन्हें कत्तों और परभक्षियों से खतरा हो सकता है। यदि बच्चे काफी गुफा या आवरण से बाहर निकलकर रेंगने लगते हैं तो उनहें एक टोकनी या बक्से में रखकर मुलायम कपड़े से ढंकें ताकि वे बाहर न जा सकें। उन पर छाया कर दें। घास या कागज से छाया करें। उनहें उसी स्थल पर रहने दें। उन पर नजर रखें ताकि कोई परभक्षी उन्हें हानि न पहुंचा सके। चूंकि उन्हें जल्दी ही निर्जलीकरण हो सकता है अतः उन्हें धूप में खुला न छोड़ें वर्ना वे तुरंत मर

सकते हैं। डलिया या संदूक को एकदम कपड़े से बंद न करें बल्कि छाया करें ताकि माँ आने पर उन्हें खोजे सकें।

3. यदि माँ रात्रि तक भी वापस न लौटे तो बच्चों को किसी सुरक्षित स्थान पर–बेहतर होगा कि घर–ले जायें। उन्हें कपड़े से ढंककर गरम रखें। यदि बच्चों वाली पालतू बिल्ली आस–पास है तो इन बच्चों को उसका दूध पिलवाने की कोशिश करें। यही सर्वोत्तम और अंतिक समाधान है। यदि यह संभव नहीं है तो फिर निम्नांकित कार्यवाही करें।
4. उन्हें तौलकर उनके वजन के अनुसार भोजन दे दें। नवजात बच्चों को पैदाइश के दो–तीन हफ्ते तक उनके वजन का लगभग 25प्रतिशत दूध लगता है। अतः यदि बच्चे का वनज 115ग्राम है तो उसे प्रतिदिन लगभग 30एम.एल. शुद्ध दूध चाहिये। दस बार तो ऐसा ही भोजन देना होगा। शुद्ध दूध बिल्ली की भांति ही होता है। बिल्लियों के लिये गाय–भैंस का दूध पर्याप्त पुष्टिप्रद नहीं होता। याद रहे कि इन बच्चों का वनज जल्दी बढ़ेगा। इसलिए उनकी खुराक़ भी वजन के अनुसार ही बढ़ाते रहना होगा। अगले 2–3 हफ्तों तक प्रतिदिन उन्हें उनके शरीर–भार का 25 प्रतिशत वजनी भोजन दें।
5. दूध पिलाने का काम बच्चों की फीडिंग बोतल से या फिर स्याही के साफ–सुथरे ड्रापर से किया जा सकता है। बकरी के शुद्ध दूध में अंडे की ज़र्दी मिलाकर दें। एक गिलास दूध में एक अंड़े की जर्दी मिलाकर धीरे–धीरे मिलायें। बिल्ली को अपने बच्चों की भांति न उठायें। बिल्ली को अपने बच्चों को खिलाते–पिलाते देखें। बच्चे पेट के बल कर लेट कर दूध पीते हैं। नीचे का चित्र देखें:

चूंकि बिल्लियां शकर और कार्बोहाइड्रेट पचा नहीं पातीं है। अतः बकरी के दूध में शकर न मिलायें। उन्हें हाई–प्रोटीन भोजन देना जरूरी है जो दूध–अंडे से मिल जायेगा। बिल्लियों की पुष्टि सम्मत भोजन की ज़रूरत हमसे सर्वथा भिन्न होती है। अदरक और प्याज तो उनके लिये विष हैं। ये वस्तुयें उन्हें कभी न दें। यदि अंडा उपलब्ध नहीं है तो शुद्ध दूध से भी काम चल सकता है। दिन में एक बार वनस्पति–तेल मिला सकते है।प प्रतिदिन दो बूंद दे। इससे उन्हें कब्ज नहीं होगा।

6. चूंकि बिल्ली के बच्चों का पेट छोटा होता है अतः वे एक बार में लगभग 5 एम.एल. यानी एक चम्मच दूध ही पी सकते हे। एक या दो ड्रापर काफी होगा। लगभग दस दिन तक प्रतिदिन 40–50एम.एल दूध पिलाने के लिये कोई दस फीडिंग करना होंगी। दो–दो घंटे से दूध पिलायें।

7. फीडिंग के पले ड्रापर को गरम पानी में उबाल कर विसंक्रमित यानी स्टेरिलाइज़ कर लें। इन बच्चों को संक्रमण बहुत जल्दी लगता हैं इसलिए छोटे बच्चों के मामले में शुरू से अहतियात बरतना चाहिये।

8. इन्हें पेशाब कराने के लिये उनके जननांगों को एक मुलायक गीले कपड़े से प्रति तीन घंटे सहलाना चाहिये वर्ना ये पेशाब नहीं करेंगे और मर जायेंगे। बिल्लियां अपने बच्चों के लिये यही काम चाट कर करती है।

9. रोज सबेरे उनकी गुदा को गीले कपड़े से सहलाकर उन्हें मल के लिये प्रेरित करना चाहिये। यदि मल न करें तो पशुचिकित्सक से परामर्श करें। पशुचिकित्सक तुरंत न मिलें तो पांच एम.एल. तरल पैराफ़ीन पिला दें। लेकिन पुश चिकित्सक से पूंछे बगैर कोई दवा न दें। बिल्लियों की शरीर रचना एकदम भिन्न होती है और बहुत सारी औषधियां जो हमारे अनुकूल हैं वे बिल्लियों के लिये विषैला प्रभाव रखती हैं।

10. जब ये बच्चे एक महीने के हो जायें तो पुशचिकित्सक के निर्देशानुसार इनके पेट के कीड़े (डिवोर्मिंग) निकालने का काम करना चाहिए। आंतो में परजीवियों के मरने की एलर्जिक प्रतिक्रिया हो सकती है इसलिए डिवोर्मिंग–औषधि देने के आधा घंटा पहले पशुचिकित्सकों द्वारा स्टेरॉयड की छोटी सी खुराक दी जाती है। इसके बाद पांच एम.एल. पैराफीन देते हैं ताकि आंतों के चिकना होने से कीड़े बाहर निकल जायें। सब पशु चिकित्सकों को बिल्लियों की डिवोर्मिंग–प्रक्रिया का ज्ञान नहीं होता है अतः इसका ध्यान रखना चाहिये। ऐसे पशुचिकित्सक से परामर्श करें जो पालतू कुत्ते–बिल्लियों का

अनुभवी हो। मवेशियों को अनुभव रखने वाले डाक्टरों की **बनिस्बत** में अधिक उपयोगी होंगे।

बस्तियों और कृषि–क्षेत्रों में जंगली बिल्लयों को बचाना क्यों महत्वपूर्ण है?

अध्ययनों से पता चला है कि अधिकांश छोटी बिल्लयों की मुख्य खुराक चूहों जैसे कृंतक (रोडेन्ट) हैं, प्रत्येक जंगली बिल्ली प्रतिदिन लगभग तीन से पांच कृंतक खाती है। इनकी संख्या साल भर में लगभग 1500 बैठती है, रस्टी छोटी बिल्लियां कुछ कम खा सकती हैं क्योंकि वे छोटी होती है। लेकिन उनकी खुराक भी काफी है। काफी संख्या में कृंतकों को समाप्त करके ये बिल्लियां एक प्रकार से किसान की मदद ही करतीं हैं वर्ना कृंतकों की संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि वे अनाज खा कर किसान का नुकसान करेंगें।

छोटी बिल्लियों को खेतों में कैसे बचाये?

एक तरीका तो यह है कि फसल–कटाई के समय हम होशियारी से देखते रहें और खेत के जिस भाग में बच्चें दिखें उतनी फसल न कांटें। हम दूर से देखते रहें ताकि माँ बच्चों को भयभीत होकर छोड़ न जाये।

दूसरा तरीका यह है कि खेतों की बागड़ पर कुछ घास/झाड़ी इत्यादि छोड़ दी जाये या फिर खेत में ही कहीं–कहीं ऐसी वनस्पति छोड़े जिनसे विडाल–परिवार को छुपकर प्रजनन करने का स्थान मिल सके। इस प्रकार न केवल सुरक्षित प्रजनन ही होगा बल्कि आवश्यकतानुसार बिल्लियों को बचकर निकल भागने का रास्ता भी मिल जायेगा तो फिर भागने और पुनः छिपने का स्थान चाहिए।

यदि यह पता हो कि बिल्ली ने अमुक क्षेत्र में बच्चे दिये हैं तो उस भाग की फसल न कांटे। इस प्रसंग में वन–विभाग को मदद करना चाहिये और उतने भाग का मुआवजा दिया जा सकता है।

बिल्ली की उपस्थिति का ध्यान रखें। उसके मल आदि से पता लग जायेगा।

ग्रामीणों के साथ चर्चा में विडाल–संरक्षण के नये–नये तरीके निकल सकते हैं। उन्हें अपने यहां बिल्लियों की उपस्थिति और उनके महत्व की जानकारी होना चाहिये। चूंकि ये बिल्लियां चूहों जैसे कृंतकों को खा जाती हैं अतः किसानों के लिये इनका बहुत महत्व है यह बात समझाई जाना चाहिए।

क्या आप बिल्ली के इन बच्चों को ले जायेंगे? 1
बच्चों की आयु तय करें ....
तैयार हो जाइये ....
आपको क्या चाहिये ....
एक शुष्क उष्म ठिकाना बनायें ....
बच्चों के स्वास्थ्य का अनुमान लगायें ....
मुक्खियों हिफाजस से कैसे भगायें ....
नवजात बच्चों को बोतल से दूध कैसे पिलायें ....
उत्तेजन का अर्थ है। समाप्ति ....
रोग और व्याधि ....
पेट के कीड़े कब निकाले : वेक्सीन कब दें ....
बच्चों का दूध कब छुड़ायें? ....
संसाधन–सूची ....
पालन प्रक्रिया ....
चार्ट (सौजन्य : एले कैट एलाइज़) ....
बच्चों के औसत भार का चार्ट ....
भोजन–कार्यक्रम ....
कोरे चार्ट (कब–कब भोजन दें, भार–चार्ट, प्रगति चार्ट) ....

बच्चों की आयु जानिये

- जन्म के समय नवजा का भार 100 ग्राम (3.5 औन्स) होता है। यदि इससे कम वनज हो तो ऐसे बच्चे के बचने की संभावना कम ही होती है।
- जन्म के तीन दिन बाद नार गिर जाता है।
- बच्चो के अग्रदंत 3–4 सप्ताह की आयु में सतथा पार्श्व–दंत 5–6 हफ्ते की आयु में निकलते हैं।
- बच्चों के विकास के चित्र।

  (www.boutiquekittens.com/kitten-development)

नवजात

- जन्म के समय अंध–वधिर होते हैं।
- लगभग चार सप्ताह तक स्वयं मल–मूत्र त्याग नहीं कर पाते।
- नार अभी भी लगा रहता है।

एक सप्ताह

आंख बंद, कान मुड़े, चल नहीं सकते, 90प्रतिशत समय सोते रहते हैं, दस प्रतिशत समय नर्स।

दो सप्ताह

दस दिन में आंखे खुलने लगती हैं, आंखे नीली होती है, कान खुल और खड़े, रेंगने लगते हैं, गूंथने लगते हैं।

तीन सप्ताह

आंखों का वास्तविक रंग दिखने लगता है, दृष्टि बढ़ जाती है, चलने का प्रथम सप्ताह (लड़खड़ाना आदि), तीन–चार हफ्ते में अग्र–दंत निकलते हैं।

चार सप्ताह

पहली बार 3–4 में अग्र–दंत निकलते हैं, बिना किसी सहायता के मल–मूत्र त्याग कर सकते हैं। (लिटर–बाक्स ट्रेनिंग देना शुरू करिये) दूध छोड़ना शुरू हो जाता है, अपने वतावरण को जानने लगते हैं, आपस में खेलते हैं, खोदना सीखते हैं, लोटमलोट लगाते हैं।

पांच सप्ताह

पांच–छह हफ्ते में पार्श्व–दंत निकलने लगते हैं, दूध छोड़कर ठोस भोजन चबाना सीखते हैं।

आवश्यक आपूर्ति

निलय हेतु

बच्चों के लिये निलय यानी घर बनाने हेतु बड़े कैरियर या पुट्ठे के बक्से हीटिंग पैड या मायक्रोवेवेबल पैड, बच्चे सट कर लेट सकें और गरम रहें। हृदयगति–उत्तेजक, (अलार्म क्लोक) सटकर लेटे बच्चों की हृदयगति देंखे, हीटर– (www.snuggleme.com)

चूंकि निम्नलिखित सामग्री को बदलना होगा अतः इनकी अतिरिक्त संख्या रखें, ऊष्मा–स्त्रोत पर रखने वाली तौलिया (एक समय में दो)

बच्चों को उढ़ाने हेतु बेबी–ब्लैंकेट

मुलायम तौलिये (लूप न हों)

धोने के कपड़े (लूप न हों)

पेपर तौलिये या गौज़ पैड

अन्य आवश्यक आपूर्ति

– कामर्शियल किटेन मिल्क रिप्लेसर (के एम.आर. पाऊडर),

– नर्सिंग बोतलें और निपल (फोर पाज़, पेटेलेन्ड में उपलब्ध),

– बोतल–ब्रश,

– स्मॉल विसक,

– स्यॉल फ़ेनल,

– इयर या डिजिटल थर्मामीटर,

- थर्मामीटर फॉर फॉरमूला,
- वेसलीन जैली, (के वाय जैली)
- किचिन (फुड) स्केल (हार्डवेयर स्टोर में मिलेगा।),
- बिस्तर, स्नानादि, भार अवलोकन
- नॉन क्लम्पिंग, कैट लिटर या फटे अखबार,
- हैंड सेनिटाइजर,
- ब्लीच
- महत्वपूर्ण फोन नम्बर की सूची
- चार्ट और पैन,
- किताबें, लेख, डी.वी.डी. आदि।

आपको जरूरत होगी

- स्टेफड़ एनिमल (अकेले बच्चे को संग–साथ हेतु),
- अनफ्लेवर्ड पेडेलियेट इलेक्ट्रोलाइट रिप्लेसमेन्ट सोल्यूशन
- कारोसीरप (शक्कर का उपयोग न करें)

गर्म, शुष्क निलय बनायें

नवजात बच्चों को गर्म रखना निहायत जरूरी है–यह तो भोजन से भी अधिक आवश्यक है। यदि आपको बच्चों की आवक का पहले से पता हो तो जरूरी चीजें पहले से खरीदकर रखें और विडाल–निलय भी बना दें।

- ब्लीजच पाऊडर : एक भाग ब्लीच और दस भाग पानी का घोल। रगड़ें और पूरी तरह सुखायें।
- जहां बच्चे हैं वहां ब्लीच का घोल या स्प्रे न बनायें।
- पैदाइश से एक हफ्ते तक बच्चों को 90^0F के आस पास तापमान चाहिये– एक सप्ताह से एक मास तक 80–85^0F और एक मास के बाद में 75^0F।
- हीटिंग पैड, लो पर सेट करें, केरियर के किनारों के छेद बन्द न करें।
- इनको लेकर सावधानी बरतं। नये भी ज्यादा–गरम होकर हानि पहुंचा सकते है।

– स्नगल–सेफ़ डिस्क (जिसमें बच्चे चिपटकर बैठ सकें) या गर्म पानी की बोतल

– बड़े थैले में चावल रखकर 60 सैकेण्ड मायक्रोवेव पर गरम करें–दो–तीना घंटे गरम रहेगा।

– हीटिंग पैड पर दो तौलिये रखें।

– बच्चो की बेबी–ब्लांकेट (कम्बल) में रखें।

– निलय को आधा खाली रखें।

– घर के बाहर जाये ंतो हीटिंग पैड को ऑफ करके जायें। सस्ता, मुड़ा हुआ तार उपयोग में न लायें।

– बच्चों के ऊपर कुछ न रखें। यदि प्रांरभ में बच्चे निश्क्रिम दिखें, खाये–पियें नही, चिल्लायें और थोड़ा सा भी संदेह हो तो पशु चिकित्सक को जरूर दिखायें क्योंकि वे शीघ्र ही रोगी हो सकते हैं।

<u>नवजात बच्चों के स्वास्थ्य को बड़े खतरे</u>

हायपोथर्मिया, डिहायड्रेशन, डायरिया, हायपोग्लायसेमिया, फ्ली एनीमिया

<u>हायपोथर्मिया (सर्दी लगना)</u>

– ठंडे बच्चों को न खिलाये–पिलायें :

– पैर और कान ठंडे हों तो समझे कि इन्हें ठंड लग गई है। बच्चे के मुंह में अपनी उंगली रखें और यदि ठंडी लगे तो बच्चे का तापमान कम समझिये। इससे जान जा सकती है। अतः शीघ्र इजाज चाहिये।

– ठंड लगे बच्चों को एक–दो घंटे तक धीरे–धीरे गरमी दें। उनहें एक तौलिया में लपेटें और अपने शरीर के पास रखें, रगड़ते–सहलाते रहें। अपने उंगली से पुनः तापमान चैक करें।

– जल्दी गरम न करें। शरीर–तापमान का स्वयमेव निगमन होने दें।

– गुदा में थर्मामीटर डालने के पहले वेसेलीन लगायें–गुदा पंचर कर सकते हैं।

– तापमान आ जाने पर डिजिटल थर्मामीटर से 'वीप–वीप' आवाज आने लगती है।

– गुदा का तापमान।

- नवजात शावक : 97–99^{0}F
- दो हफ्ते तक 98–100^{0}F
- चार हफ्ते 100–102^{0}F

डिहायड्रेशन (निर्जलन)

– यदि बच्चों के शरीर में जलीय मात्रा ठीक है तो पेशाब पीली होगी अन्यथा निर्जलीकरण पर काली, इस प्रकार छह हफ्ते से कम के बच्चों में डिहायड्रेशन पर नजर रखें। इसी प्रकार यदि बच्चों के मसूड़े नम या सटीले न होकर पीले–सूखे हैं तो निर्जलीकरण है।

– अन्य चिन्ह निम्नांकित हैः गर्दन के पीछे का ऊपरी भाग यानी स्क्रफ खींचिये तो वह ऊपर ज्यों का त्यों रह जायेगा (प्रौढ़ बिल्लियों में तो यह पक्का चिन्ह है) आंखे खुली किन्तु धंसी हुई, चेहरे में दोनों ओर खिंचवा, (सामान्यतः गोल दिखेगा), सुस्त होंगी, ठीक से खायेंगे नहीं, निपल पर जायेंगी नहीं।

– यदि एक बच्चे को निर्जलीकरण हो तो समझिये कि सबको होगा।

– इन्हें निर्जलीकरण होने पर पशुचिकित्सक को दिखायें। उन्हें सब–क्यू–फ्लूड से जलीकृत (हायड्रेट) करना होगा।

– अधिकाशंतः इन्हें एक बार जलीकृत करना होगा।

डायरिया (पेचिश)

– यदि अधिक दस्त लग रहें हैं तो इन्हें जलीकृत करना होगा। प्रोबायोटिक्स सहायक हो सकता है।

– यदि डायरिया स्वयं से ठीक नहीं हो रहा है तो पशचिकित्सक से सलाह लें। इलाज करवाना होगा।

– ज्यादा खिलाने, जल्दी–जल्दी खिलाने और परजीवियों के कारण होता है। बीमारी जानलेवा है। मल का नमूना का नमूना पशु चिकित्सक को दिखायें।

हायपोग्लायकोमिया (शर्कराभाव)

- इस रोग में बच्चे कमजोर, अवसादित और निश्क्रिय हो जाते हैं। मांस–पेशियों में अकड़न और उलटियां। इनके मसूड़ों पर थोड़ा सा कारो सीरप रखें (इससे बच्चों का शर्करा–स्तर बढ़ जायेगा। फिर बच्चों को पशुचिकित्सक के पास ले जायें।

फ्ली–एनीमियां (कीटगत–रक्ताल्पता)

- इनके बालों और शरीर पर परजीवी कीटों की अधिकता के कारण होता है। यदि एक बच्चे के शरीर पर ये कीट होंगे तो सबके हो जायेंगे।
- अधिक परजीवियों से, उनके खून चूसने के कारण रक्ताल्पता होती है। उससे बच्चे मर सकते हैं।
- यदि इन्हें नहलाते हैं तो उसके बाद धीरे–धीरे गरमी पहुंचाये।

आपूर्तियां

- डॉन या लेमन ज्वाय डिशवाशिंग लीक्विड।
- मुलायक तौलिये जिनमें लूप न हों ।
- ब्लो ड्रायर सुखाने के लिये।

प्री–वार्म बाथरूम (ऊष्मायुक्त स्नानागार)

- बच्चों को स्नानागार में लाने के पहले वहां काफी भाप कर दें।
- दरवाजे, खिड़कियां बंद करके गर्मपानी का शॉवर चला दें।
- दरवाजे में तौलिया रखकर शॉवर तब तक चलायें जब तक कि स्नानागार में भाप न हो जाये।

बच्चों को नहलाना :

- नहलाते समय हर बच्चे को उसकी गर्दन के पिछले भाग के ऊपरी हिस्से से पकड़े।
- नहलाते समय उनसे प्यार से बात करें।
- सिर, गर्दन, पीठ, पूंछ गुदा, पेट आदि पूरे बदन पर साबुन लगाकर। बालों को हटाकर खाल तक साबुन मलें। परजीवी नहीं रह पायेंगे।
- पानी आभास पाते ही सारे परजीवी बदन की परतों की ओर भागेंगे। कुछ कान, आंख, नाक और गुदा की तरफ भागेंगे।

– प्रत्येक बच्चे के लिये साबुन की कुछ ही बूंदे पर्याप्त होंगी तरल साबुन से पेट के नीचे एक पूरी लाइन बनायें।

– तरल साबुन को पतला न करें।

– साबुन लगाकर मले। सारा काम शीघ्रता से हो।

– साबुन देर तक बदन पर न छोड़े।

– आंखों पर साबुन न लगायें।

मलना

– सिर को पानी में न डुबोयें।

– बच्चे को भी पानी में न डुबोयें।

– उनका बदन मलें।

– तौलिया से सुखायें या फिर फ्लो ड्रायर से उसे आगे पीछे घुमाते हुये।

– फिर बच्चों को उनके घर में रखें जहां ऊष्मा हो।

लाभप्रद संकेत

– यदि एक बच्चे के शरीर पर परजीवी कीट है तो सबके हो जायेंगे।

– इन्हें ढूंढने का सबसे आसान तरीका पेट पर खोजना है क्योंकि वहां बाल कम होते हैं।

– आप बेबी शेम्पू या ऐसी कंघी का उपयोग कर सकते हैं जिससे यह परजीवी निकल जायें। इसमें धैर्य और श्रम लगेगा क्योंकि बच्चों को ठंडा नहीं लगना चाहियें। बीमार और कमजोर बच्चों के प्रसंग में विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है।

– बच्चों को नहलाने के लिये डिश–सोप का उपयोग एक बार से अधिक न करें–इससे खाल शीघ्र सूख जाती है। अपने बच्चों के लिये जो शेम्पू हम इस्तेमाल करते हैं वह भी इनकी खाल सूखा सकता है। इसलिये बिल्ली के बच्चों के लिये विशेष प्रकार शेम्पू लायें जो इन्हीं के लिये बना है।

– जिन बच्चों को ठंड लग गई हो और तापमान गिरकर 95^0F के नीचे हो, उन्हें कभी न खिलायें–पिलायें। इससे उन्हें एसपिरेशन निमोनिया हो सकता है।

- डायरिया न हो यह सुनिश्चित करने के लिये पहली फीडिंग में के.एम.आर. की अनुशंसित मात्रा से आधी पिलाये (और शेष को पेडियालायट मिलाकर पतला कर दें) फिर कुछ फीडिंग करें और फिर धीरे–धीरे मिल्क रिप्लेसर की पूरी मात्रा लें।
- बिल्ली के सामान्य बचचे का पेट बहुत छोटा होता है। उनके प्रति 4 औंस के शरीर–भार के लिये एक चम्मच फारमूला काफी है। ज्यादा खिलाने से डायरिया होगा।
- यदि बच्चे को दूध पीने में दिक्कत है यानी नाक से दूध की बूंदे टपकती हैं, उसका वजन बढ़ नही रहा है, वह बहुत चिल्लाता है तो स्पिलिट हार्ड पेलेट (क्लाफ्ट पेलेट) के लिये पुश चिकित्सक की सलाह लें।

बच्चों का वजन

बिल्ली के इन बच्चों का वजन प्रतिदिन एक ही समय पर लें और उसका नियमित चार्ट बनायें। नवजात शावक का वनज एक सप्ताह में सामान्यतः दुगना हो जाता है। उसका वनज आधा औंस प्रतिदिन की गति से बढ़ता रहता है।

अधिक जानकारी हेतु एले कैट एलाइज़ (Alley Cat Allies) का 'बिल्ली में बच्चों के लिये औसत भार चार्ट' देखें।

नवजात शावक को बोतल से दुग्धपान

- बोतल और निपल को विसंक्रमित (स्टेलाइज़) कर लें।
- फारमूले को गरम करें तथा तापमान को या तो थर्मामीटर से देखें या फिर कलाई पर जांच ले।
- बोतल से पिलायें।
- बच्चे के जननांग सहलायें ताकि वह मलमूत्र त्याग कर सके।
- उसे थोड़ा और फारमूला खिलायें, यदि उसने अपेक्षित मात्रा न खाई हो तो ।
- बच्चे को साफ करें।
- उसे वापस घर की ऊष्मा में रखे।

दुग्धपान की बोतल और निपल

- यह बोतले भिन्न–भिन्न प्रकार की आती हैं (निपलों के आकार–प्रकार में अंतर होता है)

– पेटलेंड में 'फोर–पाज' उपलब्ध हैं जिसे अनुशंसित किया जाता है।

– निपल में चिकुटी काट कर उसके सिरे को छांट दें।

– अच्छी तरह प्रारंभ करें।

– निपल खोलें और सुनिश्चित करें कि छेद के आर–पार दिखता है।

– यदि छेद एकदम मध्य में नहीं है तो बच्चे को दुग्धपान कराते समय ध्यान रहे कि दुग्ध–प्रवाह उसकी जीभ की ओर हो न कि हलक़ में।

– छेद इतना बड़ा हो कि फारमूला उसमें से आसानी से निकल सके यानी धीरे–धीरे बूंद–बूंद करके निकले।

– दो बच्चों को एक बोतल से न पिलायें। प्रत्येक के लिये अलग–अलग बोतल का उपयोग करें।

कमर्शियल किटेन मिल्क रिप्लेसर

– यह पाऊडर या डिब्बाबंद आता है। पालतू जानवरों की खुराक की दुकानों पर मिलता है, पशु चिकित्सालय में मिलेगा और आन लाइन मिलेगा, www. revivalanimal.com)

– इसकी ताज़गी का ध्यान रखें :

- एक्सपायरी डेट का न हो।
- जब आप इसका अलमोनियम का ढक्कन खोलें तो फारमूले को सूंघ लें। सही फारमूले में मामूली मीठी गंध होगी या फिर पाऊडर मिल्क जैसी गंध होगी। यदि किसी भी अन्य तरह की गंध हो रसायन, पनीर या तेल जैसी तो वह बच्चों के लिये खतरनाक है।
- खोलने के बाद डिब्बे को फ्रिज में रखें।

– पाऊडर और डब्बाबंद फारमूले में से एक ही दें–उनकी अदला–बदली न करें वर्ना डायरिया हो जायेगा।

फारमूला बनाना

– फारमूले के मिश्रण हेतु उसे थोड़ा फेंटें –उसके ढेले ठीक हो जायेंगे।

– बहुत सी बोतलें और निपल खरीद लें और फिर उनहें विसंक्रमित करके एक साथ भर कर फ्रिज में रखें। थोड़ी गरमी दें। फारमूला सीमित समय तक ही रहता है।

बोतलों और निपलों का विसंक्रमण

– बोतलों तथा निपलों का विसंक्रमण खोलते पानी में करें फिर साफ तौलिये पर रखकर सूखने दें। पूरी तरह ठंडा होने दें।

बोतल से दुग्धपान हेतु बच्चों की सही स्थिति

– सही स्थिति में रखें। सिर ऊंचा न हो बना फारमूला फेफड़ों में चले जायेगा जो घातक हो सकता है।

बोतल से दुग्धपान

– एक कप में मायक्रोवेव पर थोड़ा गरम किया पानी लें और उसमें फारमूले सहित बोतल रखकर थोड़ा ऊष्मा दें।

– बोतल को मायक्रोवेव में न रखें क्योंकि प्लास्टिक या रबर के सम्पर्क से दूध विषाक्त हो सकता है।

– अपनी कलाई पर कुछ बूंदे डाल कर तापमान जांच ले–थोड़ा कुनकुना लगना चाहिये। गरम नहीं।

– बोतल को भलीभांति हिला लें।

– बच्चे के गर्दन के ऊपरी भाग से पकड़ें।

– उसके मुंह में निपल रख कर मध्य में करें और बच्चे को सुविधाजनक स्थितति में आने दें।

– कुछ बूंद बाहर टपका कर बच्चें को पीने दें।

– ज्यादा न खिलायें–पिलायें वर्ना पेचिश होगी।

यदि बच्चा ठीक से दूध न पिये तो

– हो सकता है कि यह बोतल बच्चे की समझ से बाहर हो और वह निपल को जीभ से घुमाने लगे।

– उसके चेहरे को पकड़े रहें।

– बार–बार कोशिश करें। दूध की बूंद दबाकर टपकायें।

– दूसरी बार कोशिश करने से बच्चे पीने लगते हैं।

कब और कितना दें

- सामान्य फीडिंग चार्ट के अनुसार काम करें। ये निर्देश फारमूलों को लेकर हैं।
- यदि बच्चे छोटे और कमजोर है तो दो–दो घंटे से दें।
- जब ठीक–ठाक हो यानी विसंक्रमित हों और पेचिश न हो तो फिर तीन–तीन घंटे से दें।
- ज्यादा देने से डायरिया होगा।
- थोड़ी–थोड़ी देर से दुग्धपान करायें। इससे आप डायरिया को दूर रख सकेंगे। सतत् फीडिंग होना चाहिये।

कनवर्शन चार्ट

1 औंस भार = 28ग्राम   1 चम्मच = 5सी.सी. = 5एम.एल

1 ग्राम = 0.035 औंस   1 चम्मच = 0.17 तरल औंस

1 तरल औंस = 30सी.सी. = 30एल.एल. = 6 चाय के चम्मच

मसलना (बर्प)

- प्रत्येक दूग्धपान के बाद बच्चों को थोड़ा मसल दें।
- बच्चे को अपने कंधे की तरफ सीधा उठाकर एक हाथ उसके पेट पर रखें और उसकी पीठ को धीरे–धीरे थपथपायें और मसलें।

बच्चों को शुष्क–साफ रखें

- बच्चे को गीले कपड़े से पोछें।
- तौलिया से पूरी तरह सुखायें और उन्हें पुनः ऊष्मायुक्त घर में रख दें।
- यदि बच्चे बीमार हों तो तुरंत पुशचिकित्सक को दिखायें।
- बिल्ली के बच्चों का मल सामान्यतः सरसों के रंग का पीला या भूरा होता है जिसमें छोटे–छोटे ठोस भाग रहते हैं। यदि पतला या हरा मल हो तो ज्यादा खाने–पीने के कारण बीमारी समझिये।
- ये सामान्यतः दिन में एक बार मल–त्याग करते हैं किन्तु अलग–अलग बच्चों में अलग आदतें भी हो सकती है। यदि दो दिन तक मल त्याग न करें तो फिर डाक्टर को दिखायें।

आपूर्तियां

- – एक कप कुनकुना पानी।
- – पेपर टावेल और गॉज–पैड।

मल त्याग के लिये उत्तेजित करना

- – फीडिंग के तुरंत बाद करवट दिलायें।
- – जननांगो को सहलायें।
- – माँ की भांति एक तरफ मलें।
- – आगे–पीछे करके न मलें। उससे चिड़चिड़ापन होता है।
- – पेशाब होने तक करते रहें जब तक की ब्लेडर खाली न हो जाय।
- – आप मलना बंद करेगें, तो वह मल–मूत्र त्याग बंद कर देगा। इसलिये जारी रखें तब तक जब तक कि मूत्र बाहर आना बंद न हो जाये।
- – ब्लेडर खाली होने पर और फारमूला दें।
- – यदि वह निपल को न पकड़कर उसे जीभ से घुमाता है तो समझिये कि पेट भर गया।

सहायक संकेत

रूई के गाले और पैड़ो की अनुशंसा नही की जाती है।

सामान्य और असामान्य मल–त्याग

मूत्र

	सामान्य	असामान्य
रंग	धुधला पीला	गहरा रंग
गंध	गंधहीन	तीखी गंध (तेज)

मल

	सामान्य	असामान्य
रंग	पीलापन लिये भूरा	श्वेत या हरा

सहायक संकेत

- सफेद मल तभी आता है जब हाज़मा ठीक न हो। यह गंभीर समस्या है।
- हरे मल का मतलब है कि संक्रमण है जिसका इलाज एंटी बायोटिक से करना चाहिये।
- गहरे रंग और तीखी गंध का मूत्र निर्जलीकरण से होता है।
- बिल्ली के बच्चे जब फारमूले के साथ मांस खाने पर तब उनका मल गहरे रंग का हो जाता है।
- नवजात बच्चों के मामले में स्वच्छता बहुत जरूरी है। उन्हें छूने के पहले हाथ अवश्य धोलें। इनमें प्रतिरक्षिण यानी इम्यूनिटी कम होती है।

सामान्य बीमारियों की जानकारी

- **यू.आर.आइ (अपर रेस्पेरेटरी इन्फेक्शन : ऊपरी श्वसन तंत्र का संक्रमण)**

  यह एक या अधिक विषाणु यानी वायरस से होता है अतः इसका इलाज एंटी बायोटिक से नहीं हो सकता। उक्त औषधि सेकेन्डरी इंफेक्शन के लिये दी जा सकती है जो विषाणु के कारण प्रतिरक्षात्मक पद्धति की कमजोरी की वजह से होता है।

- **हरपीज़ विषाणु और कैलिसि विषाणु**

  ये दोनो विषाणु बहुत कॉमन हैं जो ऊपरी श्वसन–तंत्र में संक्रमण कर देते हैं– बच्चों को जुकाम हो जाता है। दोनों विषाणु एक साथ असर डाल सकते हैं। इससे जीवाणु–प्रेरित संक्रमण (बेक्टीरियल) होता है। इसके परिणामस्वरूप आंखो और नाक से कुछ हरा–पीला चिपचिपा स्त्राव आता है। इसके लिये एंटीबायोटिक चाहिये।

- **हरपीज़ विषाणु** के कारण आंख–नाक से पानी आता है और छींकें आती हैं। आंखों में घाव भी हो सकते हैं। यदि इसके कारण आंखें बंद हो तो सेलाइन सोल्यूशन से धीरे–धीरे धोकर साफ करें।

- **कैलिसि विषाणु** से भी इसी प्रकार के ऊपरी श्वसन तंत्र संबंधी रोग संकेत मिलते हैं। कभी–कभी मुंह सूज जाता है। मगर यह घातक होकर शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है।

- इसमें खाने की आदतें शामिल हैं क्योंकि मुंह में घावों के कारण चबाना–खाना कठिन हो जाता है। बच्चे लंगड़ाकर चल सकते है।
- दोनों पिछले या एक पांव से लंगड़ाकर चल सकते है। यह भी भी घातक हो सकता है।

– शुरू में तो पशु चिकित्सक भी कैलिसि के बारे में न सोचकर लंगड़ाहट का मांसपेशियों विषयक इलाज करेगा।

– छोटे बच्चों का टीकाकरण मुश्किल होता है।

– हरपीज़ वायरस की भांति यह भी संक्रामक होता है।

- **कोक्सीडिया**

एक सख्त खोल वाला परजीवी है जो ब्लीच से नहीं मरता।

– जिससे पेपर तौलिया से सफाई करें उसे फेंक दें।

– मल में रॉसबेरी के जैम सदृश पदार्थ दिखेगा।

– बच्चों को साफ करें और कपड़े फेंक दें।

- **जिआरडिया**

यह परजीवी जल से आता है और डायरिया करता है।

डायरिया

यह तो जानलेवा हो सकता है। यदि यह डब्बाबंद भोजन के बाद पाऊडर लेने से नहीं हुआ है तो यह अपने आप ठीक नहीं होगा। इसका इलाज करना होगा। इसके लिये पशुचिकित्सक को दिखाकर प्रो–बायोटिक्स, सब–क्यू–फ्लूडस, एंटी–पेरासिटिक आदि औषधियां देना होंगी।

फेलाइन पेन्यूकोपेनिया (फैलाइन डिसटेम्पर) वायरस

चूंकि दिमागीतौर पर डरने–चौंकने का रोग है अतः अनाथ बच्चों के लिये विशेषकर खतरनाक हो सकता है। बहुत संक्रामक है। सफाई रखे। नवजात को अलग रखें। बच्चों को जानलेवा डायरिया, उल्टी निर्जलीकरण, बुखार, रक्तपूर्तिता यानी सेप्टोसेमिया और शॉक (धक्का लगना) आदि हो सकते है। सवंमित मांओं से जन्में बच्चों के तंत्रिका तंत्र यानी नर्वस सिस्टम को क्षति पहुंचा सकती है जिससे चलने में लड़खड़ाहट आयेगी, संतुलन की समस्या होगी, भटके आयेंगे, परंतु शनैःशनै यह बच्चे सामान्य जीवन जी सकेंगे।

फेडिंग किटिन सिन्ड्रोम

कुछ बच्चे शुरू में तो अच्छे दिखते हैं लेकिन बाद में कुछ सप्ताह बाद बीमार हो जाते हैं। आप उनकी कितनी भी देखभाल क्यों न करें कभी–कभी ऐसा होता है जो हम नहीं जानते

वह सब प्रकृति जानती है। हमारे सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद बच्चा मर जाता है। आप तो बच्चों को खूब प्यार करें बस.........

एन्टी बायोटिक

बेक्टीरियल इन्फेक्शन के इलाज हेतु दवाई का पूरा कोर्स दें। दवा शीघ्र बंद न करें। ऐसा न करें कि सुपर–बग्स पैदा हो जायें।

- दो सप्ताह के बच्चों की हर दूसरे हफ्ते डीवॉर्मिंग (पेट के कीड़े निकालना) करनी होगी। पशुचिकित्सक उचित औषधि और उसकी खुराक बतायेगा। आपके बिल्ली के बच्चे दवाइयों के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं अतः दवा देने के पहले सदैव डाक्टर से पूंछ लें।
- सामान्य बच्चों को पैदाइश के सोलह घंटे बाद मातृजन्य प्रतिरक्षण यानी इम्यूनिटी मिल जाती है जो उन्हें कई हफ्तों तक बचाती है। मां की खीस यानी कोलोस्ट्रम से बढ़कर प्रतिरक्षण विधि अन्य कोई नहीं है। मगर कभी–कभी प्रो–बायोटिकों द्वारा अमाशयान्य विकास विकार (गैस्ट्रोइटेस्टाइनल) को ठीक किया जा सकता है। दूसरी बिल्ली का खून दें सकते है, डाक्टर से पूंछे
- चार सप्ताह की आयु के बाद बच्चे अपना एंटी–बॉडी स्वयं बनाने लगते हैं, अनाथ बच्चे छह सप्ताह तक बीमारियों के प्रति अति संवेदनशील होते हैं। इसलिये उनकी देखभाल संक्रमित बिल्लियों से अलग आपके घरों में ही हो सकती है।
- छह से आठ हफ्ते की आयु में टीकाकरण शुरू कर देना चाहिये। अनाथ बच्चों को तो दो सप्ताह बाद ही टीका लगना चाहिये। इस संबंध में डॉक्टर से सलाह लें। कुछ टीकों से हानि हो सकती है। छोटे बच्चों को गलत टीकाकरण हानिकारक हो सकता है।

बच्चों को दूध छुड़ाना (वीनिंग)

- बोतल से दुग्धपान के बदले प्लेट से ठोस भोजन देना।
- चार सप्ताह की आयु से दूध छुड़ायें।
- फारमूले को उथले प्याले में रखें। फ्रिसबी ठीक रेहेगा।
- दूध छुड़ाना थोड़ा कठिन है क्योंकि बच्चे प्याले में खायेंगे–प्याले से नहीं।
- जब दूध छुड़ाये तो उथले प्याले में पानी छोड़े।

- पानी शुद्ध हो– फिल्र्ड। पानी हमेशा उपलब्ध रहे।
- दो भाग डिब्बेबंद भोजन और एक भाग फारमूला एक उथले प्याले में दें। इस प्रकार उच्च गुणवत्ता का ठोस डिब्बाबंद भोजन देना शुरू होगा।
- अपने हाथ से खिलाकर बच्चे को प्रोत्साहित करें।
- जब वह उथले प्याले से खाने लगे तो दुग्धपान बंद करें।
- जब बच्चा ठोस खाने लगे तो शनैः शनैः फारमूला देना कम करें।
- उथले प्याले में सूखा किटेन–फुड देने लगे।
- खूब खिलायें कम से कम दिन में तीन बार।
- उनके भोजन में परिवर्तन से डायरिया हो सकता है।
- छह सप्ताह या उससे ज्यादा उम्र के बच्चों को दूध छुड़ाना जारी रखें। उन्हें ठोस खाना खाने और पचाने में समय लगता है।
- इन बच्चों को तमाम व्यक्तियों और पशुओं से परिचित करायें इससे इनके भावी व्यवहार की समस्यायें सुलझाने में सहायता मिलेगी।

सहायक संकेत

– बिल्ली के बच्चों को गाय का दूध न दें। वह आसानी से पचता नहीं है।

– उन्हें ऐसा भोजन न दें जिसमें प्याज़ हो। उससे रक्ताल्पता होगी।

– उन्हें नियमित रूप से डिब्बाबंद ट्यूना न दें। उससे विटामिन ई की कमी हो सकती है।

पुस्तकें

द गाइड टू हेन्डरेज़िंग किटेन्स : सुसान ईस्टरली (जो तापमान दिये गये हैं वे अब सही नहीं है। एलेकेट एलाइज़ पर उपलब्ध हैः www.alleycat.org

डी.वी.डी.

फेलाइन नियोनेटल केयरः लाउडाउन एस.पी.सी.ए. (टिप्पणी) यह फिल्म बिल्ली के बच्चों को कपड़ों से ढंकने की सलाह दी जाती है। हम यह सुझाव नहीं देते क्योंकि बच्चों का दम घुट सकती है। बच्चों के ऊपर कुछ न रखें। एलेकेट एलाइज़ पर उपलब्ध

www.alleycat.org

वेबसाइट

– www. kitten-rescue.com

- Cats.about.com
- www. NYCFeralcat.org
- www.alleycat.org

किटन डेवेलपमेंट फोटो :

- www.boutiquekittes.com/kitten-development

बच्चों को दूध छुड़ाना (वीनिंग)

- बच्चे पालने की प्रक्रिया।
- पालने हेतु आवेदन करें।
- स्क्रीन एडोप्टर (संदर्भ देखें)
- पालने के लिये शुल्क लें।
- स्वयं आकर देखें : विंडो आदि पर स्क्रीन देखें।
- हस्ताक्षरित पालन : मस विडा लें।
- स्मरण कराये।

******